द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक संगोष्ठी

(दिनांक 15-16 दिसम्बर, 2024)

‘कृत्रिम मेधा से प्रभावित जीवन के हेतु वेदों की शिक्षा’

प्रतिवेदन

वेद भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। ज्ञान की अक्षुण्णता एवं समग्रता के सिद्धान्त ही भारतीय संस्कृति, वाङ्मय एवं दर्शन के केन्द्र में रहे हैं। सभ्यता के आरम्भ से ही ज्ञान की नित्यता की इस अवधारणा को अनुभूतिगम्य मानकर विविध उपायों द्वारा उसकी अभिव्यक्ति पर बल दिया गया है। वर्तमान युग तकनीक का युग है। तकनीक का प्रयोग लगभग जीवन के सभी क्षेत्रों में किया जाने लगा है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में भी इसका प्रयोग विभिन्न रूपों में हो रहा है। तकनीक के माध्यम से हमारी सभ्यता एवं समाज को विभिन्न रूपों में प्रकट किया जा रहा है। वैदिक ज्ञान और विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम मेधा (ए आई) के माध्यम से मानव जीवन को प्रभावित करने वाले पहलुओं पर विमर्श आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के वैदिक हेरिटेज पोर्टल एवं अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान, गुरुग्राम द्वारा दिनांक 15-16 दिसम्बर, 2024 को ‘कृत्रिम मेधा से प्रभावित जीवन के लिए वेदों की शिक्षा’ विषय पर द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस प्रातः 10.00 बजे उद्घाटन सत्र का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ। इस सत्र के अध्यक्ष के रूप में डॉ. सतीश रेड्डी, पूर्व अध्यक्ष, रक्षानुसन्धान विकास संगठन (डीआरडीओ), मुख्य प्रवचनकर्ता के रूप में स्वामी धर्मबन्धु, अध्यक्ष, वैदिक मिशन ट्रस्ट, सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, मार्गदर्शक के रूप में माननीय श्री दिनेशचन्द्र, संरक्षक, विश्व हिन्दू परिषद्, प्रो. बृजकिशोर कुठियाला, पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा राज्य शिक्षा परिषद्, प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा, निदेशक, अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान आदि विद्वद्गण उपस्थित रहे। सर्वप्रथम प्रो. भावना पाण्डेय द्वारा सभी अतिथियों का सत्कार करते हुए स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इसके अनन्तर प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा ने अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान का परिचय देते हुए कहा कि यह वेदों के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित संस्थान है। इसमें विभिन्न स्तरों पर शोधकार्य किया जाता है। इन शोधकार्यों को ‘श्रुतिप्रभा’ नामक शोध पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है। इसी शृंखला में प्रो. सुधीर लाल, निदेशक, वैदिक हेरिटेज पोर्टल द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वैदिक हेरिटेज पोर्टल प्रकल्प की कार्यशैली एवं रूपरेखा तथा भावी कार्ययोजनाओं को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया। इस पोर्टल पर वेदों का दृश्य-श्रव्य रूप में प्रलेखन किया गया है। इसके अनन्तर प्रो. बृजकिशोर कुठियाला द्वारा संगोष्ठी के विषय की रूपरेखा एवं संकल्पना को प्रस्तुत किया गया। इन्होंने कहा कि वेद मानवजीवन की प्राचीनतम सुघटना हैं एवं कृत्रिम मेधा नवीनतम घटना है। ये दोनों ही मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। अतः कृत्रिम मेधा की कार्यशैली हेतु समाज द्वारा दिशानिर्देश निर्धारण, संस्कृत के अध्येता को कृत्रिम मेधा के माध्यम से शोधविषयक मार्गदर्शन एवं वेदों में विज्ञान आदि विषयों को जानने के उद्देश्य से इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। कृत्रिम मेधा एक तकनीक है, जिसके

माध्यम से हमारे ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति की जा रही है। इसकी प्रामाणिकता हेतु हमें एक आचार संहिता (Code of ethics) बनाने की आवश्यकता है। इसी शृंखला में स्वामी धर्मबन्धु द्वारा अपने उद्बोधन में वेद का अर्थ, विषयानुसार वेदों का वर्गीकरण, वेदों में निहित ज्ञान, वर्तमान समाज एवं कृत्रिम मेधा में वेदों की भूमिका आदि विषयों को रेखांकित किया गया। इसके अनन्तर डॉ. सच्चिदानन्द जोशी द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में किए जा रहे वैदिक ग्रन्थों पर शोध एवं उनका प्रकाशन तथा वैदिक हेरिटेज पोर्टल प्रकल्प के विषय में उपस्थित विद्वज्जनों को अवगत कराया। इन्होंने कहा कि हम वैदिक ज्ञान को वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए सहज, सरल एवं बोधगम्य रूप में उपलब्ध कराएँ। कृत्रिम मेधा के समुचित उपयोग हेतु उन्हें दिशा-निर्देश प्रदान करें। तत्पश्चात् प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी द्वारा मंचस्थ अतिथियों का शंख एवं सम्मान-पट्टिका प्रदान कर अभिनन्दन किया गया। इसके अनन्तर मा. श्री दिनेशचन्द्र द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा गया कि वेद अपौरुषेय, सार्वकालिक, सार्वलौकिक एवं ज्ञान-विज्ञान से युक्त हैं। इसका मानव जाति के लिए सन्देश है कि हम विश्व को श्रेष्ठ बनाएँ। इसी क्रम में डॉ. सतीश रेड्डी द्वारा अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा गया कि हमें प्राचीन (वैदिक ज्ञान) एवं नवीन (कृत्रिम मेधा) ज्ञान के मध्य सेतु बनाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के अन्तिम चरण में मंच संचालिका प्रो. भावना पाण्डेय द्वारा उपस्थित विद्वज्जनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

इसके अनन्तर सात शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया। इनमें से चार सत्र संगोष्ठी के प्रथम दिवस तथा तीन सत्र द्वितीय दिवस को आयोजित किए गए। इन सत्रों में विभिन्न विषयों पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इन सत्रों के विषय क्रमानुसार निम्न हैं -

1. वर्तमान सन्दर्भ में ऋग्वेद का परिचय
2. वर्तमान सन्दर्भ में यजुर्वेद का परिचय
3. सामवेद का सामाजिक और आध्यात्मिक महत्त्व
4. वर्तमान सन्दर्भ में अथर्ववेद का परिचय
5. वेदों में सामाजिक संरचना एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ
6. पर्यावरण संरक्षण हेतु वेदों की आवश्यकता
7. वेदों में कुटुम्ब एवं परिवार सम्बन्धित व्यवस्थाएँ

इसके अनन्तर 'कृत्रिम मेधा से प्रभावित जीवन के लिए वेदों की शिक्षा- मुक्त चिन्तन, संकल्प एवं कार्ययोजना' विषयाधारित सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का संयोजन प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा एवं प्रो. बृजकिशोर कुठियाला द्वारा किया गया। इसमें अनेक जिज्ञासुजनों द्वारा वेद एवं कृत्रिम मेधा के विषय में अपनी जिज्ञासाएँ व्यक्त की गयीं, जिनका समाधान उपस्थित विद्वानों द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त इस सन्दर्भ में भावी कार्ययोजना हेतु विभिन्न सुझाव दिए गए, जो इस प्रकार हैं -

प्रश्नोत्तर -

1. कृत्रिम मेधा संस्कृत के सिद्धान्तों से किस प्रकार सम्बद्ध है?

उत्तर - कृत्रिम मेधा एवं संस्कृत के सिद्धान्तों में अन्तर्सम्बन्ध है, क्योंकि कम्प्यूटर की गति पदार्थ एवं वाक्यार्थ में प्रायः असम्भव है, यथा- गच्छति भवती घटना भवति। इसका वाक्यार्थ है- आपके चले जाने पर घटना होती है। यहां तिप् प्रत्ययान्त शब्द गच्छति, भवति और शतृ प्रत्ययान्त शब्द भवती है।

कम्प्यूटर को उक्त तीनों शब्द क्रियापद प्रतीत होते हैं। उस में सन्निहित आंकड़ों में कहीं भी एक वाक्य में तीन क्रियाओं का प्रयोग नहीं है। अतः वह पदार्थ एवं वाक्यार्थ करने में अशुद्धियाँ कर सकता है। जब तक हम उसे शतृ प्रत्यय का बोध नहीं करायेंगे, तब तक वह पदार्थ एवं वाक्यार्थ शुद्ध नहीं कर सकता। इसी प्रकार उसके द्वारा गच्छति का उत्तरदेश संयोगानुकूल व्यापार के अनुसार शुद्ध अर्थ प्रकट नहीं किया जा सकता।

2. भारत को आत्मनिर्भर एवं विश्वगुरु बनाने में वेदों की भूमिका क्या है?

3. वेदों में मानसिक प्रदूषण निवारण अथवा मन को निर्मल बनाने के उपाय क्या हैं?

4. प्रायः एलोपेथी चिकित्सा पद्धति में देखा जाता है कि हमारे एक अंग के रोग निवारण हेतु दी गयी औषधि हमारे अन्य अंग को प्रभावित करती है। क्या वेदों में ऐसी चिकित्सा पद्धति है, जो हमारे अंग विशेष के रोग का निवारण अन्य अंगों को प्रभावित किए बिना कर सके?

5. वर्तमान में प्रचलित सामगान की प्रामाणिकता क्या है?

उत्तर - सामवेद की सहस्र शाखाएं हैं। इन शाखाओं के अनुसार इसका गान सहस्र प्रकार से होता है। शाखाभेद के आधार पर सामगान की शैली में भेद होता है। सामगान की शैलियाँ- गुर्जर शैली, गोवर्धनी शैली, राणायणीय शाखा की शैली। सामगान में स्वरों का अत्यधिक महत्त्व है। इसमें स्वरोच्चारण सम्यक् रूप होना आवश्यक है। स्वर के अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का प्रकाशन उपयुक्त अर्थ में हो सकता है।

6. वर्तमान समाज में कृत्रिम मेधा की चुनौतियाँ क्या हैं?

उत्तर - हमें कृत्रिम मेधा से भयाक्रान्त होने की आवश्यकता नहीं है। यह हमारे लिए औषधियों के समान अनेक क्षेत्रों में उपयोगी है। जिस प्रकार औषधियों के द्वारा हमें स्वास्थ्य लाभ भी होता है और उनके अनुचित प्रयोग से हानि भी होती है, उसी प्रकार कृत्रिम मेधा का सावधान एवं विवेकपूर्वक उपयोग हमारे लिए लाभदायक होगा।

7. गूगल सर्च इंजन पर हम जिस विषय का अन्वेषण करते हैं, तो वहाँ कृत्रिम मेधा द्वारा अपने में निहित आंकड़ों के आधार पर उस विषय को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। हमें इसकी प्रामाणिकता का बोध किस प्रकार होगा?

8. नई शिक्षा नीति 2020 में कृत्रिम मेधा की चुनौती को कैसे समाहित करते हुए बच्चों को सरल रूप से वेद को सीखा सकते हैं?

9. क्या इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का वैदिक हेरिटेज पोर्टल प्रामाणिक है?

10. क्या एक डॉक्टर को मेडिकल साइंस के साथ-साथ आयुर्वेद का अध्ययन करना आवश्यक है?

11. हमारे स्वस्थ रहने में हमारी दिनचर्या एवं आहार की किस सीमा तक भूमिका है?

12. प्रत्येक 21 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ध्यान दिवस के रूप मनाये जाने का उपक्रम चल रहा है, इस सन्दर्भ में हम भारत में क्या-क्या कर सकते हैं?

13. क्या पाश्चात्य दर्शन वेदों की पीठिका पर विकसित हुआ है? क्या पाश्चात्य दर्शन के बीज वेदों में निहित हैं? क्या पाश्चात्य दर्शन वेदों से प्रभावित है? क्या दर्शन के उद्भव स्थल के विषय में जानने हेतु भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है?

उत्तर - पाश्चात्य दर्शनसम्मत अस्तित्ववादी मत है। इसका विचार है कि 'मैं हूँ, इसलिए सोचता हूँ'। अध्यात्म की ओर जाता हुआ विचार- यदि मैं नहीं सोचता हूँ, इसका अभिप्राय यह नहीं है कि मेरा अस्तित्व नहीं है। उक्त विचार के बीज वेदों में निहित हैं। रोबोटिक थ्योरी, क्वान्टम फिजिक्स, कृत्रिम मेधा आदि भी वेदों की ही देन हैं।

14. क्या कृत्रिम मेधा पाश्चात्य देशों से प्रभावित है? कृत्रिम मेधा हमारी संस्कृति के मूल को जानने में किस प्रकार उपयोगी हो सकता है?

15. प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में वेदों के बीज वपन का मार्ग क्या हो सकता है?

16. क्या वेदाध्ययन हेतु संस्कृत भाषा की आवश्यकता है?

उत्तर- वेदाध्ययन हेतु संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक नहीं है, क्योंकि वेदों की अपनी भाषा है। इसी के शब्दों का संस्कार करके संस्कृत भाषा को प्रवाहित किया गया है। इसका प्रमाण वेद (ऋग्वेद, वाक् सूक्त, 8.100.11) में ही प्राप्त होता है। वेद का व्याकरण, वेद का शब्दकोश निघण्टु एवं निरुक्त संस्कृत के व्याकरण एवं कोशग्रन्थों से भिन्न हैं।

17. संस्कृत भाषा एवं वेद पठन सरल रूप में कैसे सीखें?

18. वर्तमान सामाजिक जाति व्यवस्था को वेदसम्मत वर्णव्यवस्था में किस प्रकार स्थानान्तरित किया जा सकता है?

सुझाव -

- एक वेद को आधार बनाकर एक सम्मेलन का आयोजन हो, जिसमें उस वेद के समग्र पक्षों कर विमर्श किया जा सके।
- शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के प्रातिशाख्य के अनुसार परिशुद्ध पाठ के निर्णय की आवश्यकता है, अतः उक्त विषयाधारित एक गोष्ठी का आयोजन किया जाए।
- शुक्ल यजुर्वेद के मुद्रित ग्रन्थों की सम्यक् रूप से समीक्षा की जाए तथा शिक्षा ग्रन्थों के अनुसार पाठ निर्णय करना चाहिए।
- सम्मेलन में प्रस्तुत पत्रों पर विचार किया जाए तथा उनमें विचारित एवं प्रतिपादित विषयों का एक-एक करके विवेचन, विद्वानों द्वारा उक्त विषयों पर संवाद, विचार विमर्श, ऊहापोह, प्रश्नोंत्तर पूर्वक निर्णय भी किया जाए।
- एक वेद पर आधारित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाए, जिसमें उसके विभिन्न पक्षों पर अपने विचार व्यक्त करने हेतु विद्वानों को पर्याप्त समय प्रदान किया जा सके।

इसके अनन्तर समापन सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में प्रो. बृजकिशोर कुठियाला, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, मा. श्री सुरेश सोनी, मा. श्री दिनेशचन्द्र एवं प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा आदि विद्वज्जन मंच पर उपस्थित रहे। इसमें वैदिक हेरिटेज पोर्टल, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान के मध्य हस्ताक्षरित समझौता पत्र का परस्पर आदान-प्रदान किया गया। डॉ. नीता ने मंचस्थ अतिथिजनों का अभिनन्दन किया। इसके अनन्तर प्रो. बृजकिशोर कुठियाला द्वारा संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी में देश-विदेश से लगभग 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं उन्होंने कुल दस सत्रों में वेद के विभिन्न विषयों पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए, जिनसे उक्त विषय में निश्चित रूप से हमारा ज्ञान वर्द्धन हुआ है। इस प्रकार हम इस संगोष्ठी के माध्यम से हमारे (आधुनिक जीवन में वेदों की भूमिका, अग्रिम कार्ययोजना एवं उसके प्रति संकल्प आदि) उद्दश्यों की प्राप्ति करने में सफल रहे हैं।

इसके अनन्तर डॉ. सच्चिदानन्द जोशी द्वारा अपने वक्तव्य के माध्यम से आशीर्वचन प्रदान किए गए। इन्होंने कहा कि कृत्रिम मेधा हमारे लिए लाभकारी भी है और इसके खतरे भी हैं। भारत में श्रुति एवं स्मृति की परम्परा रही है, हमें इसके चिन्तन की आवश्यकता है। इस परम्परा के हम संवाहक हैं। हमारी ज्ञान सम्पदा पुस्तकों की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क एवं हृदय में रहती है। हमारे यहाँ ज्ञान को हृदयंगम करने की परम्परा वैदिक शिक्षा प्रणाली से अनुप्राणित है।

वर्तमान इण्डियन नोलेज सिस्टम का वेदों में विस्तृत विमर्श किया गया है। इसमें बताया गया कि किस प्रकार वैदिक ज्ञान परम्परा का हमारे जीवन में तारतम्य है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में हमारी यह परम्परा विस्तारित है, फैली हुई है। वेद सार्वकालिक एवं शाश्वत हैं। इनकी उपादेयता, प्रासंगिकता व सार्वकालिकता के विषय में किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

विश्व में अनेक युद्ध हुए हैं, जिनमें प्रायः शस्त्रास्त्रों एवं रासायनिक हथियारों का प्रयोग किया गया, किन्तु भावी वैचारिक युद्ध में विजयप्राप्ति हेतु उपर्युक्त साधनों के साथ-साथ हमें वैचारिक योद्धाओं की आवश्यकता होगी, जो भारत के विचार, दृष्टिकोण एवं दृष्टि को विश्व में पहुँचा सकें। इसके लिए हमारे पास एकमात्र शक्ति हमारी सशक्त और शाश्वत वैदिक परम्परा है। यदि हमने वैदिक ज्ञान को सारे विश्व में उस दृष्टिकोण से प्रसारित किया तो वह भारत को उस वैचारिक द्वन्द्व में श्रेष्ठता के चरम पर ले जा सकती है।

इसके अनन्तर मा. श्री दिनेशचन्द्र ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि सृष्टि का कालचक्र ऊपर अन्तरिक्ष के शिखर एवं निम्नतम नीचे की इकाई तक आता-जाता है। इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है। वेद भी इसी कालचक्र के भाग हैं। ये कभी भी समाप्त नहीं होते, केवल लुप्त होते हैं। इनका सृष्टि एवं प्रलय के क्रमानुसार आविर्भाव-तिरोभाव होता रहता है। वर्तमान में वैदिक ज्ञान कालचक्र की निम्नतम इकाई से उठकर उच्चतम शिखर पर पहुंचने का समय प्रारम्भ हो गया है, क्योंकि अब पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी वैदिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु तैयार है।

इसके अनन्तर मा. श्री सुरेश सोनी द्वारा कृत्रिम मेधा (AI) की अभिव्यक्ति में वेदों की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। थिओडोर रॉजर, रॉजर पेनरोज़, युवल नोआ हरारी आदि विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए इन्होंने

कहा कि तकनीक हमारी परम्परागत ज्ञान परम्परा की अभिव्यक्ति का माध्यम बन रही है। इस विषय में प्रामाणिक ज्ञान की अभिव्यक्ति हेतु हमें बृहद स्तर पर प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। तकनीक के माध्यम से हम एक सोसिओ-टेक्नो-इकोनो एवं मल्टीडिसिप्लिनरी-मैन (Socio-techno-econo-multidisciplinary man) बनाने का प्रयास कर रहे है किन्तु हम यह भूल रहे है कि उपकरणों के उपयोग की एक सीमा है। मनुष्य एक जीवमान इकाई है, उसे तकनीक के माध्यम से अभिव्यक्त करना संशयास्पद है। हमारे सभी प्रश्नों की उत्तर-प्राप्ति तकनीक के माध्यम से प्रायः असम्भव है। सन्तुष्टि, सुख, आनन्द आदि हमारी पूर्णता की अनुभूति है। इन्हें तकनीक के द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। कृत्रिम मेधा से प्रभावित दुनिया में वेदों की शिक्षा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि कृत्रिम मेधा एक उपकरण है। उपकरण के उपयोग हेतु उसका एक करण होता है। उपकरण की शुद्धता करण की शुद्धता पर निर्भर है। वैदिक शिक्षा की पृष्ठभूमि में उपकरण एवं करण का समग्र रूप में विचार करने की आवश्यकता है। वेदों में कौटुम्बिक सम्बन्धों के विषय में व्यापक चिन्तन किया गया है। इनमें आदर्श कुटुम्ब व्यवस्था का उल्लेख प्राप्त होता है। वैदिक समाज आशावादी समाज रहा है। इनमें पुरुषार्थ, पराक्रम एवं देवत्व प्राप्ति हेतु अनेकानेक प्रार्थनाएँ उल्लिखित हैं। हमें वर्तमान में जयिष्णु एवं विजयिष्णु समाज के निर्माण के लिए अपेक्षित सूत्रों को वेदों में अन्वेषण की आवश्यकता है। वर्ण व्यवस्था का आधार योग्यता या कर्म कुशलता रही है। वैदिक समाज में सभी वर्णों के प्रति सम्मान की भावना थी। इसके साथ ही वेदों में सृष्टि, जल, भूमि एवं पर्यावरण आदि तत्त्वों पर विस्तृत चिन्तन किया गया है। हमारे समक्ष उपस्थित प्रश्न गुरु-शिष्य सम्बन्ध, व्यक्ति, परिवार, समाज, ग्राम-सभा, समिति, राज्य एवं राष्ट्र का स्वरूप प्रकृति के प्रति हमारी दृष्टि आदि का उत्तर हमें वेदों में निहित हैं।

इसके अनन्तर मंचस्थ अतिथियों द्वारा सभी सत्रों के प्रतिवेदन का विमोचन किया गया। अन्त में प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा द्वारा सभी विद्वज्जनों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इन्होंने कहा कि कृत्रिम मेधा एक उपकरण है, उसका एक करण है एवं उस करण का भी एक कर्ता है। उपकरण एवं कारण की शुद्धता कर्ता की शुद्धता पर निर्भर है। अतः कर्ता का शुद्ध होना आवश्यक है।

बाएं से दाएं- प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी, प्रो. बृजकिशोर कुठियाला, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, मा. श्री दिनेशचन्द्र, स्वामी धर्मबन्धु, डॉ. सतीश रेड्डी, प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा

वक्ता- मा. श्री सुरेश सोनी

डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली एवं प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा, निदेशक, अशोक सिंहल वैदिक शोध संस्थान, गुरुग्राम, हरियाणा के मध्य हस्ताक्षरित समझौता पत्र का आदान-प्रदान

संगोष्ठी के प्रतिवेदन पत्र का विमोचन करते हुए